अध्याय १:- भारत के प्रमुख लोक नाट्य के प्रकार

लोक साहित्य का सामन्य परिचय:

'लोक' शब्द की व्युत्पति:

साहित्य म लोक शब्द का बहत समय से प्रचलित है। मनुष्य के म उदद्भव ऐसा माना जाता है की जब से इस पृथ्वी पर जीव है तब से लोक का होना अनिवाय है, हमारे पास पहले लिखित भाषा नहीं थी इसलिए कोई पुरवा नहीं है, परंतु यह कहना गलत नहीं होगा की मनुष्य इस दुनिया म अवतरित है तब से लेके आज तक लोक शब्द का प्रयोग होता आया है। समय के साथ कुछ साहित्यकारों ने उसकी खोज की और उनके मूल तक जाने का प्रयास किया है। लोक शब्द का मूल संस्कृत भाषा से माना जाता है। "'लोक' शब्द संस्कृत के लोकृ दशने' धातु से घअ प्रत्यय करने पर आया है। इस धातु का अथ 'देखना' होता है, जिसका लट् लकार म अन्य पुरुष एक बचन का रूप 'लोकते' है।"(१) इसे यह अथ होता है 'देखने वाला'। 'लोक' शब्द अत्यंत प्राचीन है। साधारण जनता के अथ म इसका प्रयोग ऋग्वेद म अनेक स्थानों पर किया गया है। ऋग्वेद म लोक के लिए 'जन' का भी प्रयोग उपलब्ध होता है"(२)

उपनिषदों म अनेक स्थानों म 'लोक' शब्द का उपयोग हआ है। (जैमिनीय) उपनिषद ब्राह्मण म यथाथ ही कहा गया है कि यह लोक अनेक प्रकार से फैला हआ है। प्रत्येक वस्तु म यह प्रभूत या व्यापत है। (कौन) प्रयत्न करके भी इसे पूरी तरह से जान सकता है? (३)

बह व्याहितो वा अयं बहशो लोक:।

क एतद् अस्य पुनरीहितो आयात्॥

महान व्याकरण पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी म 'लोक' तथा 'सवलोक' शब्दों का उल्लेख किया है तथा इनसे ठत्र प्रत्येय करने पर 'लौकिक' तथा 'साव लौकिक' शब्दों की निष्पत्ति की है (४) 'सवत्र विभाषा गो:६/१/१२२ सूत्र की वृति को देखने से पता चलता है कि लोक और वेद मे (झंत 'गो' शब्द के पद के अंत विकल्प भाव होता है।(५) इससे ज्ञात होता है कि पाणिनि ने वेद से पृथक लोक को

सत्ता को स्वीकार किया है। उन्होंने अनेक शब्दों को निष्पत्ति बताते हए लिखा है कि वेद म इसका रुप कुछ प्रकार का है परंतु लोक म इसका स्वरूप भिन्न प्रकार का समझना चाहिए। (६) वररुची ने अपने वातिको म भी 'लोक शब्द का प्रयोग किया है इन्होंने भी अनेक स्थानों पर इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि कुछ शब्द का लोक म अनेक रूप म व्यवहार होता है। "महा भाष्य कार पंतजलि ने लोक म प्रचलित गो: शब्द के अनेक रूपों का उल्लेख अपने प्रसिद्ध ग्रंथ म किया है।"(७)

भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र के चौदहव अध्याय म अनेक नाट्यधर्मो तथा लोकधर्मो प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है। महर्षो व्यास ने अपनी शतसाहस्त्री सहिता को विशेषताओं का वतन करते हए लिखा है कि यह ग्रंथ (महाभारत) अज्ञान रूपी अन्धकार से अंधे होकर व्यथित लोक (साधारण जनता) को आँखों को ज्ञान रुपी अंजन को शलाका लगाकर खोल देता है।

"अज्ञानतिमिरान्धस्य लोकस्य तु विचेष्टा:।

ज्ञानजन शलाकाभिनैत्रोन्मीलनकारक्म्॥

भगवद्गीता म 'लोक' तथा 'लोकसंग्रह' आदि अनेक शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया गया है। "भगवान श्रीकृष्ण ने 'लोक संग्रह' पर बड़ा बल दिया है। वे अजुन को उपदेश देते हए कहते है। - (८)

"कमणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादय:।

लोक संग्रह मेवापि संपश्यन् कतुमहसि॥

कहने को आवश्यकता नहों कि यहाँ लोकसंग्रह का अथ साधारण जनता का आचरण, व्यवहार तथा आदश है।

"लोक" शब्द को परिभाषा:

'लोक' शब्द लोक 'दशने' घातु से बना शब्द है, जिसका अथ है- "देखना' । लोक-ऐसा स्थान जिसका बोध प्राणी को हो अथवा जिसको उसने कल्पना कि हो वेदों म 'लोक' शब्द आम जनता का पचायवाची माना गया है। भगवद गीता मे लोक शब्द इसी अथ म प्राप्त होता है। यहाँ दृष्टव्य यह है कि उपनिषदों म दो लोक माने गये ह- (१) इह लोक (२) परलोक अधुनिक शब्द कोश म 'लोक' के आठ

अथ दिये गये ह। जैसे- जगत, स्थान, प्रदेश, दिशा, लोग, प्राणी, देश, समाज आदि। सम पाताल और सम लोगों का वणन पुराणों म प्राप्त है।

हिंदी म 'लोक' शब्द के लिए 'लोग' जिसका अथ है. 'सामान्य जन' लोक साहित्य के विशिष्ट अध्ययन हेतु लोक शब्द के दो अथ विस्तार हए है। (१) विश्व या समाज (२) सामान्य जन साहित्य। संस्कृति को विशेषता समझते हए 'लोक शब्द ग्राम्य माना जाता रहा। लेकिन डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी 'लोक' के उटक अथ से सहमत नहों है। आचाय हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'जनपद' के प्रथम अंक से म स्पष्ट शब्दों म लिखा है कि- " लोक शब्द का अथ ग्राम्य नहों है बल्कि नगरों और गांवों म फैली हई वह समूची जनता है। जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहों ह। ये लोग नगर म परिष्कृत रुचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समजने वाले लोगों को अपेक्षा अधिक सरल और परिष्कृत रुचि वाले लोगों को समूची विलासत और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएं आवश्यक होती है उनको उत्पन्न करते है।" (११)

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने इस उपलक्ष्य म कथन किया है कि- " जो लोग संस्कृत या परिष्कृत वग से प्रभावित न होकर पुरातन स्थितियों म ही रहते ह वे लोक होते ह।" (१२)

इसी प्रकार लोक शब्द को व्याप्ति को मदेनजर रखते हए डॉ.श्याम परमार ने लिखा है कि -" लोक शब्द का प्रयोग गीत, वाता, कथा, संगीत, साहित्य, आदि से जुडकर साधारण जन-समाज जिसमे पूव संचित भावनाएँ, विश्वास आदि सुरक्षित ह और जिसम भाषा शैलीगत सामग्री ही नहों अन्य विषयों के अनगठ रत्न छिपे होते ह। (१३)

संक्षेप म 'लोक' शब्द को इन व्याख्याओं को देखते हए यह स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि - यह शब्द उस विशेषण का वाचक है जो दूर-संचार, सभ्यता, शिक्षा आदि से पूव आदिम मनोवृत्तियों के अवशेषों म समाहित है। 'लोक' को सीमा उदेश्य, महत्व, प्रयोजन शीलता आदि को देखते हए 'लोक' को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है-

"लोक वह मनुष्य समाज है जो अपनी परम्पराओं म प्रचलित रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन, लेन-देन और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने से अशिक्षित कहलाता है।" (१४) विश्वभारती (शांतिनिकेतन) के उड़िया विभाग के भूतपूव अध्यक्ष डॉ. कुंजबिहारी दास ने लोकगीतों की परिभाषा बतालाते हए 'लोक' शब्द की भी सुंदर व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने लिखा है- 'लोकगीत' उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सभ्य प्रभावों से बाहर कम या अधिक रूप म आदिम अवस्था म निवास करते है।" (□□) □□. □□□□ □□□□□ □□□□□□ '□□□' की परिभाषा निम्नलिखित है- " □□□□□□ □□□□ □□□, □□□□ प्राकृतिक परिवेश म निवास करने वाली तथा कथित अशिक्षित एवं अशिक्षित जनता को '□□□' □□□□□ जिनका परम्परायुक्त नियमों से नियंत्रित होता है। (□□)

इससे स्पष्टता ज्ञात होता है कि जो लोग संस्कृत तथा परिष्कृत लोगों के प्रभाव से बाहर रहते हए अपनी पुरातन स्थिति म वतमान है उन्ह '□□□' की संज्ञा प्राप्त है। इन्हीं लोगों के साहित्य को लोक □□□□□ कहा जाता है। यह साहित्य जब मौखिक है तथा परम्परागत रुप से चला आता है। यह साहित्य जब तक मौखिक रहता है तभी तक इसम ताजगी तथा जीवन पाया जाता है। लिपि की कारा म कैद करते ही इसकी संजीवनी शक्ति नष्ट हो जाती है।

लोक शब्द की प्राचीनता म "□□□□ □□□□ □□□□□ लेखों म '□□□' शब्द का प्रयोग समस्त प्रजाजनों के लिये हआ है।" (□□)

बौद्ध धम के विकास के साथ मानव भावना का महत्व बढने लगा और '□□□' □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ "प्राकृत एवं अपभ्रंश म प्रयुत्क '□□□ □□□' (□□□ □□□) □□□□□ □□□□□' (□□□ □□□□) शब्द भी लौकिक आचोरां का महत्व प्रकट करते ह। हिंदी म तुलसीदास जी ने □□□ □□□ □□□□ (□□□□□) स्थिति स्पष्ट की है।" (□□) वेदों म विराट पुरुष की कल्पना है जिस म सामाजिकता का स्वरुप भी वणित हआ है। यह पुरुष सहस्त्र मुख नेत्र-□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□, क्षत्रिय भुजा, □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□

यह लोक अनेक रूपों म परिव्याप्त है। अखिल संसार के समस्त मानव- □□□□, □□□□□ क्रि□□ कलापों तथा विचार परम्पराओं के रुप म लोक को अवस्थिति है। देश-□□□ □□ □□□□ □□□□ अनवरुद्ध यह सामाजिक विकास को एक प्रगतिशील चेतना है।

"□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□द्र□, □□□ □ □□, □□□□, □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □ष्ट्र □□ □□□ स्□रू□ □, लोक कृत्सन ज्ञान और सम्पूण अध्ययन म सव शास्त्रों का पयवसान है। अवाचीन मानव के लिए लोकसर्वोच्च प्रजापति है। लोक, □□□ □□ □□त्रि □□□□□□□□□ (□□□) □□ लोक व्यक्त रूप मानव- यही हमारे नये जीवन का अध्यात्म-शास्त्र है। इनका कल्याण हमारी मुक्ति □□ द्वार और निवाण का नवीन रूप है। लोक (□□□), □□□□-इसी त्रिलोक म जीवन का कल्याणतम रुप □□"(□□)

□□.धीरद्र वमा के मत म - "वास्तव म लोक साहित्य वा मौखिक अभिव्यक्ति है, □□ □□□□ □□□□ (□□क्ति) □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□"(□□)

□□. सत्यद्र के अनुसार लोक साहित्य को परिभाषा है- " लोक साहित्य के अंतगत वह समस्त बोली □□ □□□□□□ □□□□क्ति □□□ □□□□□ □ (□) □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ अभिव्यक्ति हो जिसे किसी को कृति न कहा जा सके, □□□□श्रु□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ मानस को प्रवृत्ति म समाई हई हो।

(□) □□□□ □□ □□□□□□ □□□-मानस के सामान्य तत्वों से युक्त हो कि उसके किसी व्यक्ति के □□□ □□□□ □□□□□ □□, लोक उसे अपने व्यक्तित्व को कृति स्वीकार कर।" (□□)

संक्षेप म '□□□' शब्द को इन व्यवस्था को देखते हए यह स्पष्ट रुप से कहा जा सकता है कि- □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□, शिक्षा आदि से पूव आदिम मनोवृत्तियों के □□□□□ □ □□□□□□ □□'□□□' □□ □□□□, उद्देश्य, □□□, प्र□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ '□□□' को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता □-" □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □

प्रचलित रितिरिवाज, □□□□□, □□□-□□□, □□-देन और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने □□□□क्षे□ □□□□□ □□"(□□)

□ग्रे□□ □□folk शब्द के समान स्त्रोत का आधार एव प्रस्तुत '□□□' शब्द निमित हआ है।

साहित्य:

आज हमारे दिन प्रति दिन बोल चाल म साहित्य शब्द प्रचुर अथ म उपयोगी हो गया है। उसके अंतगत सम्पूण वाडमय आता है राजशेखर ने साहित्य के संदभ म लिखा है कि -"□ब□ □□ अथ के यथायोग्य सहयोग वाली विद्या साहित्य है।" (□□)

□□□□ □□स□□ □□□□ रवींद्रनाथ टागोर ने साहित्य की व्याख्या इस प्रकार की :- "साहित्य शब्द से □□□□त□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□-□□□ □□ □□□□-□□□□ □□, ग्रं□-ग्रं□□□□ मिलन नहीं है बल्कि मनुष्य के साथ मनुष्य का, □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □त□त अंतरंग मिलन भी है। जो कि साहित्य के अतिरिक्त अन्य से सम्भाव नहीं है।"(□□)

साहित्य एक दूसरे के विचारों को प्रकट करने का महत्वपूण साधन है। इसी संदभ म पाश्चात्य के हेनरी हु□□ □□□□□ □ □□ "□□□□त□ □□□: भाषा के माध्यम द्वारा जीवन की अभिव्यक्ति है।"(□□)

गहराई से देखा जाए तो हेनरी की इस परिभाषा का लोक साहित्य की और अधिक झुकाव है। अत: सबसे पहले लोक साहित्य की परिभाषाएं स्वरूप, □□□□ु□ □□□ □□ प्र□□□ □□□□□

प्र□□□ □□□□ □ □□□□-ज्ञान के यह दोनों शब्द रहे ह।

१- वेद एवं २ लोक।

वैदिक ज्ञान वतमान समय म पुस्तकीय ज्ञान मात्र बनकर रह गया है जिसे साहित्य या वाड्मय के नाम लौकिक ज्ञान से तात्पय तत्कालीन एवं सावकालीन व्यवहार कुशलता से है। लोक का अपना एक व्यवहारिक ज्ञान का संचित (□□□) □□□□ ज्ञ□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□- ज्ञ□ □□ □□□□ □□□□□□□त□ □□□□□-ज्ञ□ □□ □□□□ □□□□□□□त□ □□□□□-ज्ञान के अभाव म शास्त्रीय ज्ञान व्यथ है। लोक-ज्ञ□ □□□□□ □□□ि□ □□□□ □ □□□□□ □□ □□त्र □□□□ □□"(□□)

□□□-ज्ञान के महव को देखते हए अलग अलग विद्वानों द्वारा इसका अध्ययन किया गया तथा विद्वानों द्वा□□ □□□-ज्ञा□ □□ □□ □□□-वाता का नाम दिया गया। लोक साहित्य को अंग्रेजी म '□□□ □□□□□' कहा जाता ह।लोक वाता को '□□□ □□□'। फोकलोर शब्द का प्रथम प्रयोग पाश्चात्य विद्वान डब्लू जे. □□□□ द्वा□□ 1846 □ □□□□ □□□ □□□ □□ '□□□□□' शब्द आंतराष्ट्रीय पारिभा□□□ □ब□□□□ □□ रुप म समस्त यूरोप म स्वीकृत हो चुका है। '□□□ □□□' □□ □□□□□□□ □ब □□□ □□ '□□□ □□□□' शब्द अथ को दृष्टि से भले ही संकुचित प्रतीत होता हो, परंतु क्षेत्र कि दृष्टि से यह अत्यंत विस्तृत है। □□□-वाता शब्द- '□□□' □□'□□□□' इन दो शब्दों के योग से बना है इसलिए लोक-□□□ □□ □□□□□ □□□□ '□□□' □ब □□ □□□□ □□□□ □□श□□ □□□□□' □ब □ग्रे□ □□'□□□' □ब □□ समानार्थो है। यह सह्ब्द समान्यत: दो अर्थो म प्रयुक्त किया जाता है- □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ दृष्टि से समस्त विश्व और (□□) अथ म मानव से संबंधित समाज। आधुनिक विद्वानों द्वारा लोक शब्द कई अर्थो म प्रयुक्त किया गया है। कुछ विद्वानों ने लोक को '□□' □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □'ग्रा□' □□ '□□□' को सीमित परिधि के अंतगत बँधा है। कुछ विद्वान अशिक्षित □□ अल्प सभ्य व्यक्तियों के वग को '□□□' □□□□□□ □□□□□□. सत्यद्र ने '□□□' □□ □□□□□□□ प्र□□ □□□□□ □□□ □-"'□□□' मनुष्य समाज का वह वग है, जो आभिजात्य संस्कार, □स्त्र□□□, और पाण्डित्य को चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्र□□□ □ □□□□ □□□□ □"□□

□□. श्र□□□ □□□ □□□□ □□□ □□- "□□□ □□ □ब □□ □□□□□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□□-□ज□, □भ□□, □क्ष, परिष्कार आदि से (□□) मनोवृत्तियों के अवशेषों से युक्त परिधि को □□□□ष्ट □□□□ □"□□

पूणिमा श्रीवास्त्व ने '□□□' □□ □□□□ प्र□□ □□□□□ □□□ □- "वास्तव म '□□□' □□ □□ □□ □□-□□□□ □□, जो विस्तृत रुप म पृथ्वी पर फैला हआ है और जिसम सभी प्रकार के मनुष्य □□□□□□ □"□□

उक्त विचारों के आधार पर निष्कम हम कह सकते ह कि '[illegible]' [illegible] जो अपनी प्राचीन मान्यतओं एवं परम्पराओं के प्रति आस्थावान है। वह आधुनिक सभ्यता एवं कुत्रिमता से दूर अपनी प्राचीन सभ्यता से जुडा हआा ह, [illegible] तक वह अपनी प्राचीन संस्कृति, [illegible], [illegible] जिसम आदिम युग को मनोवृत्तियों के कुछ न कुछ अवशेष [illegible]

[illegible] '[illegible]' शब्द को परिव्याप्ति म नगर गाँव आदि सब कुछ आ जाता है। इस नगर या गाँव को सीमित परिधि के अंतगत बाँधना उचित नहों [illegible] '[illegible]' [illegible] 'ग्र[illegible]' [illegible] '[illegible]' [illegible] '[illegible]' के समक्ष संकुचित अथ एवं क्षेत्रवाले प्रतीत होते ह। वतमान समय म विद्वानों द्वारा '[illegible]' शब्द एवं ग्राम के पाचाय के रुप म न स्वीकृत कर विस्तृत अथ [illegible]

साहित्य से तात्पय वाड्मय से है। स्वर्गीय आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों मे - "[illegible]" [illegible] साहित्य शब्द अथात् जिससे हित हो, [illegible] भावात्मक अभिव्यक्ति ही साहित्य है। अंग्रेजी म साहित्य का [illegible] '[illegible]' [illegible] तात्पय है- [illegible]- अथात् शब्द संबंधी। लिटरेचर म वह धम एवं कल्याण -[illegible]- साहित्य से तात्पय उस अभिव्यक्ति से है जिससे समस्त लोक का हित हो, [illegible] '[illegible], [illegible]-[illegible] क्षेत्र एवं व्याप्ति साहित्य को अपेक्षा अधिक [illegible], उद्देश्य को दृष्टि से दोनों समान ह। इसके साथ ही कवि या साहित्यकार, [illegible], [illegible]-[illegible]-वाता से बहत कुछ ग्रहण करता है तथा उन्ह लोक मयादा का विशेष ध्यान रखना [illegible], बाद म साहित्य से साहित्य म साहित्यिक तथा लोक मूल का उद्घाटन करना ही लोक वाता का विषय है।

लोक साहित्य

जन साधारण म वे लोग समूह सम्मिलित माने जाते ह जो विशिष्ट वग से पृथक होते ह इनको □□ □□□□ साहित्य रहा उसे लोक साहित्य कहते ह। उनके ज्ञान का आधार विज्ञान नहों होता आपितु पूव प्रचलित परम्पराएँ और पीढी दर पीढी श्रुत ज्ञान होता है। समाज म व्याप्त विश्वास, □□□□□,□ आदश ही इनको जीवनधारा का निधारण करते ह। अत: बनावट से दूर ह्रदय को निश्चल स□□ □□□ □ अवगाहन कर वे सरलता का रसपान कराते ह। लोक साहित्य के अंतगत आँचल म प्रचलित जादू-□□□, □त्र-□त्र, □□-प्रे□, □□□-□□□□, □□□-□□□□□, □□-□□□, □□□-□□□, □□-□□, □□□-f□□□, □□, □□□, □□□, □□, □□□, □□□□□□ □□ □□-साधारण को संस्कृ□ □स□रू□ □□□□□□: □□ □□□त□, लोक संस्कृति का प्रतिबिम्ब, □□□ □□f□□ □□□त□ □□□□□□ लोक साहित्य होता है। इसको भाषा व्याकरण के नियमों से सदा मुक्त होती है। जनभाषा के माध्यम से □□□ □□□,□□□, □□□ □□ □□-उल्लास को अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक □□□त□ □ □□□□□□ □□□□□ □□

लोक साहित्य को जन पहचान हेतु विभिन्न विद्वानों-विदूषियों के मत है। डॉ। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस संबंध मे अपने विचार व्यक्त करने हेतु लिखा है को- "जो चीज लोक चित्र ए शिधे उत्पन्न हों साधारण जन को आंदोलित करती ह वे ही लोक साहित्य नाम से पुकारी जाती ह।"31 लोक चित्र से तात्पय है जो परंपरा प्रतीत विवेचना फरक शास्त्रों उनको टिप्पणियों से अपरिचित हो। डॉ। धीरद्र वमा का लोक साहित्य के संदभ म अभीमत है -" ऐसी मौलिक अभिव्यक्ति जो लोक को □-□□ □□□ □□□□ □ □□□□त रहते हए जिसम लोक मानस का प्रतिबिम्बित रहता है, □□ साहित्य है। वह मौखिक अभिव्यक्ति है और सामान्य जन समूह उसे अपना मानता है।"32

यह संक्षिप्त तथा एकाँको परिभाषा है। डॉ। सुनीति कुमार चटर्जो लोक साहित्य के संदभ म लिखते है □-" □□□□□□ □□□ □□त्र □□ □□□□□ □□□-□□□□, श्रद्धा के द्वार अभिव्यक्त होता है उसे, □□ □□□त□ □□□□" 33 अथात इस व्याख्या म लोक रंजन समूह के स्वामित्व का स्वरूप स्थूलता आदि का निदश नहों है।

[illegible]. सत्यद्र जी अपना विचार लोक साहित्य के बारे म सुस्पष्ट शब्दों म लिखते ह- "[illegible] जातियों म प्रचलित एवं पिक्षाकृत समुन्नत जातियों के असंस्कृत समुदायों म अविशिष्ट विश्वास रीति-[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"34

[illegible]. सत्येन्द्र ने लोक साहैती को विस्तृत परिभाषा दी लेकिन उसम स्वरूप तथा वैशिष्ट्य कथन [illegible] डॉ। कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक साहित्य को परिभाषा इस प्र[illegible] -"सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहज व्यवस्था मेन जो निरीक्षर जनता [illegible]-[illegible], [illegible]-[illegible],[illegible]-[illegible], [illegible]-[illegible]ख को अभिव्यंजना जिस साहित्य [illegible] प्र[illegible] [illegible]-साहित्य कहते ह।"35

[illegible] प्र[illegible] [illegible]-साहित्य लोगों का वह साहित्य है जो लोगों द्वारा, [illegible] [illegible] 'महाराष्ट्र का हिन्दी लोक कवि के अंतगत लोक साहित्य का अधिक अद्यायन करने के पश्चात लिखा है कि- " जो लोग सन्स्क्रत तथा परिष्कृत लोगों के प्रभाव से बाहर रहते हए भी अपनी पुरातन स्वाभाविक स्थिति मेन वतमान ह, उन्ह '[illegible]' कि संज्ञा प्राप्त है और इन्हों लोगों के साहित्य कहा जाता है जिसको परंपरा प्राय: [illegible]"36

विदेशों मे भी लोक साहित्य का काफो अध्ययन हआ तथा हो र[illegible] "Encyclopaedia of America" म लोक साहित्य को परिभाषा इस प्रकार निरुपित है- "folklore is the Science which embress cell that relates to Ancient observance and customs to the nations, lecleifs traditions superstitions ad prejudice of the couenen people" 37 इसी प्रकार लोक साहित्य को लेकर आर।आर। मेरिट ने लिखा है को- "Folklore maybe said to include the Culture of the people which has not been works into the official religion and history but which is and has always been of self gowth"38

□□□□ष्ट्र □ मराठी के उपासक डॉ। नानदापुरकर ने यहां के लोकसाहित्य को लेकर अभिमत प्रकट □□□□ □ □ी "लोक वाङ्मय म्हणे लोकांको निमाण केलेले आणी मौखिक परंपरा ने प्राप्त झालेलेने □□□□□ □□□□□□□□□ " 39

लोक साहित्य को परिभाषा और स्वरूप

□□-□□ □ी □□□□□ □□□□□□ी □युगों युगों से संचित कोष को ही विद्वानों द्वारा □□□□□□त□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□-जन के इस संचित कोश को मानव द्वारा हृदय और मस्तिक मेन सुरक्षित रखा गया और अनेक अवसरों पर आवश्यकता के रूप मेन इसका प्रयोग किया गया। □□स्□रू□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□न □□□□□ □□□।

लोक साहित्य को युगों-युगों को लंबी यात्रा के मध्य न जाने कितनी परम्पराएँ बनी और मिटी, समय म न जाने कितने परिवतन हए मान्यताएं बदली, □□न□□□□ □□□□त□ □प्र□□ □□□ ,□□□□ □□ आस्था मेन तनिक भी कमी नहों आई और वह निरंतर पल्लवित और प्रष्पित होता रहा। लोक □□□□त□ □ □□□□□□-□□□□□ □□□ □न□□□ □□□□ □□□□□□ □ी □□□□ □□ □□ □□□व□क्ति □□ □ध्□□ □□□□□ □□□, □□□ □ी □श□□□□ □□□□रू□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ी □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□, लोक साहित्य अपना अस्तित्व बनाएँ हए है। लोक □□□□ □□□ □□□□त□ के प्रति सच्ची भावना से आस्थावान है।

अनेक विद्वानों द्वारा लोक साहित्य को परिभाषा किया गया है। नीचे कुछ प्रमुख विद्वानों को परिभाषा □□ □□ □-

□□.□त□□ □म्□ -" □□□ □□□□त□ □ □□□□□: जीवन को भावनात्मक अभिव्यक्ति ही मिलती है और □□□ी □□□□□□□ी □□□ □□□□□ □□□□ □□"40

[illegible]. [illegible] - "[illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]

हृदय और मस्तिक मेन संचित भाव और अनुभव सामाग्री के गद्य अथवा पद्य म मौखिक प्रकाशन को

[illegible]"41

[illegible] '[illegible]' -"[illegible] परंतु समुद्र तट को [illegible], उसके कगार किसके वश के ह। लोकसाहित्य समुद्र को भांति ह, [illegible] प्रांत म, प्रांत को सम्पूण बोलियों म, जीवन के प्रत्येक विषय पर, भावों को लहरों के अनंत बहाव म [illegible], संगीत को अजस्र मादकता म जिसके लेखक अविरल रुप से देश को गाथा [illegible], बिना प्राशंसा को प्रतीक्षा किए अनाम, [illegible] दृष्ट"42

[illegible]:- "[illegible]"43

[illegible]- "[illegible] संस्कृति का अमूल्य भंडार है- जिसम धम, [illegible] -झूलते और खेलते रहे ह और जो को इन सबका समन्वित कलात्मक रुप ह।"44

[illegible] -साहित्य को लोक को ऐसी कृति के रुप म स्वीकारा गया है, [illegible] का समान अधिकार है। लोक साहित्य लोक को अपार निधि है। यह सत्यम-[illegible] गुणों से युक्त है। सत्यम इसलिए को इसको कभी मृत्यु नहीं होती आदिम युग से लिकर अब तक [illegible]-पीढ़ी होता हआ यह अपना अस्तित्व बनाए उए है। यद्यपि इस बीच म परिस्थितियों वश [illegible], परंतु अपनी मूल आत्मा कभी नष्ट नहीं हई और न ही [illegible] - रुपी गुण को ही छोड़ा जब को बड़े मनीषियों को कृतियाँ काल के गत म समा गयीं या समय के परिवतन के साथ ही अनुपयोगी हो गई।

लोक साहित्य मंगलमय है यह शिवम तत्व से युक्त ह क्योंकि इससे लोक का सदैव कल्याण हआ है। इसम मानव को सुमाग का ज्ञान प्राप्त हआ है। इससे मानव कतव्य पाथ को ओर प्रेरित हआ है। इससे लोक व्यवहार को शिक्षा प्राप्त हई है। सत्य-□□त□, □□□□-अनुचित का ज्ञान प्राप्त हआ है। एक छोटी सी लोकोक्ति पथभ्रष्ट को सुमाग को और प्रेरित करने मेन सक्षम है। महाकवि बिहारी के □□म□□□□□□ दोहे से उसके आश्रयदाता राजा को भाले ही कतव्य पथ को प्रेरणा मिली-

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहि काल।

अली कली ही सौ बाँध्यौ, आगे कौन हवाल।।"45

□□□□□ □□□□□□□ □□ □ल□□□ □□□? जब को लोक साहित्य मेन किसी व्यक्ति विरोध को नहीं वरन समस्त लोक के कल्याण को भावना निहित है। लोक साहित्य समस्त लोक का सुमाग-□□□ □□ □□□ □□□□त□ □ी ख□□□, प्रसार एवं लोक प्रियता का आधार शिव ही है।

□□□ □□□□त□ □□□□□-□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □ क्यों□ , □□□□□□□त □□□□ □त□ □□□क्त □□□□□□ स□□□□ □□□ '□ि□□प्रे' □□प्रत□□ □स□□ सौंदय देखना उसका स्वभाव है। सुंदर को ग्रहण करना तथा असुंदर को त्यागना उसके स्वभाव को विशेषता है। इसी आधार □□ □□-अलंकार आदि को सृष्टि हई है। स्वाभाविकता एवं सरसता सुंदरता के आवश्यक गुण ह। □□□□□ □□□□ □□□□□□□ प्र□□□ □□□-साहित्य सुंदरम तत्त्व से युक्त है। इसी गुण के फल स्वरूप वह □□-□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□: लोक साहित्य सुंदरम तत्त्व से परिपूण है, □□□ □□ गरिमामय एवं अनंत भी है क्योंकि इसको गति अक्षुण्य है।

सभ्यता के प्रवाह से दूर एवं कूटी हए निरंतर भोली भाली जनता ने अपनी सरल जन भाषा म अपनी ही अन बहलाव के लिए जो कुछ मौखिक रूप म गया और जिन-□□□ □□□ि □ि □□□व□क्ति दी वही लोक साहित्य है। इसम भिन्न-□□न□ □□□ि □□ □□□□ि □□□□□ि □ि □□□□□□ अभिव्यक्ति होती है। परंपरागत रूप म विद्यमान इस मौखिक अभिव्यक्ति का न तो कोई रचिता होता है और न ही □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□-भरा पेड़ है जिसको रूप सुंदरता मन को मुग्ध

[illegible], परंतु उसको सप्रमाण बनाए रखने वाली एवं सभी प्रकार का रस पहँचने वा[illegible] कहीं अज्ञात एवं अदृश्य ह।

साहित्य शिष्ट साहित्य अथवा परिनिष्ठित साहित्य तथा कथित सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत लोगों के मानवीय भावों एवं विचारों को मानक भाषा म लिखित एवं लिपिबद्ध कलात्मक अभिव्यक्ति है। [illegible] लेखा जोखा है। वह मुट्ठी भर लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। यह वादों एवं रूढ़ियों से ग्रस्त होता है और यह व्यक्ति निमित होने के कारण इसके रचिता का नाम हमम से हर कोई जानता है। यह परिमित होता है और इसका रचना विधान परंपरा के प्रवाह को छोड़कर पूण अहं चैतन्य के साथ होता है। इसम जन साधारण को आहों एवं कराहों का अंकन [illegible]

"सम्पूण साहित्य- शिष्ट एवं लोकसाहित्य को यदि हम रुपक म बाँधना चाह तो कह सकते ह कि उसका सम्पूण रुप पानी म तैरने वाले हिम खंड के समान है जिसका दसवां हिस्सा शिष्ट या अभिजात साहित्य है जो पनि कि सतह पर दिखाई देता है और लोक साहित्य हिम खंड के नौ हिस्सा भाग के [illegible], दिखाई नहीं देता एवं अज्ञात होता है।" 46

यहां हम यह समझ लेना है कि लोक साहित्य एवं साहित्य के भीतर का साहित्य शब्द अपने-[illegible]-अलग अथ का सूचक है। कवि नाट्य कथा इनका ललित एवं कलात्मक रुप ही साहित्य है। जबकि लोक साहित्य म आया हआ साहित्य शब्द अंग्रेजी के 'lore' [illegible]

लोक साहित्य एवं साहित्य का अंतर तथा [illegible] श्रीराम शमा का यह मानना [illegible] "लोक साहित्य किसी प्रकार के नियमों, बंधनों से मुक्त विस्तृत परिधि वाली स्वच्छंद गति से प्रवहमान धारा है तो शिष्ट साहित्य उसके चुने हए कुछ भावों को लेकर सजा हआ वह नहर है जिए स्वतंत्र रुप म नहीं दिया जा[illegible] प्र[illegible]-प्रसून स्वरूप से छन-[illegible]

को प्रत्येक साहित्य म अहं चैतन्य को व्याहित होती है। शिष्ट साहित्य म यह ऊपरी सीमा पर रहता है □□□ □□□□□□त्य म यह अहं चैतन्य के कारण ही लोकसाहित्य म लोकतत्व को समाहिती होती है। यो तो शिष्ट शैत्य म भी लोकत्व होते ह लेकिन उसम वह प्रधानता ग्रहण नहों करता। वहाँ पर लोकत्व साहित्य के प्रेरणा, लोकप्रियता तथा आधार प्रदान करता है। लोकतत्व को प्रधानता रहती है□ □□□ साहित्य को अभिव्यक्ति के समस्त अंगो का विश्लेषण किया जाय तो बिदित होगा को उन अंगो म से कुछ ही अहं चैतन्य को उच्चकोटी से संपृक्त होते है।"47 साहित्य के अध्ययन के लिए लोक साहित्य □□ □□□□□ □□□□ □□श□□□□ □, तो आधुनिक काल म लोकसाहित्य का शिष्ट साहित्य म प्रयोजन सम्पन्न हो रहा है। दोनो परस्पर पूरक तथा प्रयोजनशील ह। वैसे साहित्य म दोनो आते ह, □□□ो □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □,□□□ो □ □□□ो □□□ □□ □,□□□: □□ष्ट □□ □□□ □□□□त □ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ भी इस प्रसंग म अत्यावश्यक है। प्रत्येक साहित्य म यह ऊपरी सीमा निर्धारित होती है जब को लोकसाहित्य म आंशिक स्तर पर लोकतत्व शिष्ट साहित्य को प्रेरणा लोकप्रियता तथा शत्वि प्रदान करता है लोकसाहित्य म अभिव्यक्ति के प्रत्येक अंग म लोक तत्व ही मुख्यत: □□□□ □□

लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य म अंतर :-

साहित्य के अध्ययन के लिए लोक साहित्य का उपयोग करना जरूरी है, □□ □□□□□ □□□ म लोक साहित्य का शिष्ट साहित्य म प्रयोजन हो रहा है। दो एक दूसरे पूरक है। वैसे साहित्य म लोक साहित्य एवं शिष्ट साहित्य दोनो पा□□ □□□□□ □□□ □, दोनो म अनेक तथ्यो का साम्य है, □□□ □□ □□□ो □ □□□ो □□□ □□ □□□□: शिष्ट साहित्य एवं लोक साहित्य म भेद का आधार जान लेना भी जरूरी है। साहित्य म चैतन्य होता है, वही सीमा निरधारित होती है। लोक साहित्य म आंशिक स्तर पर □□□□□ □□□□त्य म लोक तत्व जुड़ा है वैसे साहित्य म लोक साहित्य म लोक तत्व विद्यमान है परंतु वह प्रधान नहों होता है। लोक तत्व शिष्ट साहित्य को प्रेरणा लोक प्रियता तथा शक्ति प्रदान करता है, लोक साहित्य म अभिव्यक्ति के प्रत्येक अंग म लोक तत्व ही मुख्यत: □□□□ □□

लोक साहित्य और साहित्य का परस्पर संबंध तथा अंतर को लेकर तुलनात्मक अध्ययन करगे:-

लोक साहित्य अवैज्ञानिक है जबकि साहित्य वैज्ञानिक प्रक्रिया है। लोक साहित्य को सृजन शीलता समूह को जबकि साहित्य को सृजन शीलता किसी एक व्यक्ति को है। अशिक्षित जनता का □□□□□□त□ □□□□ □ो □□-लिखे एवं सुसंस्कृत जनता का साहित्य है। लोकसाहित्य दृश्य- श्राव्य स्वरूप का है। लोकसाहित्य निमिति को प्रक्रिया निरंतर है और साहित्य को प्रक्रिया एक बार ही होती □□□□□ □□□□त□ □□□□□ □□ □□-□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □ो □□□□त□ □ख□□: □□□□□ □□□□द्र□ होता है। लोक साहित्य म आम हितोपदेश का आविष्कार जबकि साहित्य म व्याकरण का पूरा निवाह होता है। लोक साहित्य का स्वरूप प्रयोगशालात्मक एव संमिश्र काला है जबकि साहित्य सिफ कला है। लोक साहित्य म परंपरा को बहत महत्व है तथा साहित्य म नीति □□□ □□ □□□□ □□त□ □□ लोकसाहित्य म काला एवं प्रतिभा दूसरे दज को होती है जबकि साहित्य म काला एवं प्रतिभा प्रथम दज को होती है। लोक साहित्य कुछ मात्रा म स्थूल एवं भड़कोला होता है जबकि साहित्य सूक्ष्म, गहराई पुष्क व्यंजक तथा वैचारिक है। लोक साहित्य □□ □स□□ □□□, □□□ □ो □□ज्ञ□□न्द्र□ सुख संवेदना पर अधिकतम जबकि साहित्य म चिंतन मनन व्यंग्याथ को भरमार अधिक लोकसाहित्य का माध्यम आंचलिक बोली जबकि साहित्य म माध्यम स्तरीय भाषा है। लोक साहित्य निमित प्रेरणा □□□-□□□ □□□□□ □□□□त□ □□□□□ प्रे□णा सिफ हष प्रामि ह।

इस प्रकार लोक साहित्य और साहित्य म बहत अंतर देखाई देता है। वाक्य विन्यास, □□ल□, अथद्योतक और कथन शैलीआदि को लेकर भी लोक साहित्य और साहित्य म भिन्नता दिखाई देती है। लोक साहित्य और साहित्य को तुलना करने से यह स्पष्ट हआ है को लोक साहित्य को प्रमुख भूमिका साहिय को निमित ही है। अत: लोक साहित्य एवं साहित्य म जैसे बहत समीपता देखाई देती □□

लोक साहित्य और साहित्य म अंतर

लोक साहित्य प्रस्तुतीकरण म हर बार नया रसानुभाव, र[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]दृष्टि-गोचर होती है। लोक साहित्य एवं साहित्य सदैव वतमान तथा ताज़गीपूण वैता है। इस दोनों को सदा एक दूसरे म लेन-[illegible] [illegible] [illegible]: वे परस्पर प्रभावशाली है। लोक साहित्य को निमित प्राचीन या मध्ययुगीन काल म कहों तो किसी व्यक्ति ने ही को होगी बाद म समुदायिकता [illegible] [illegible] [illegible]: साहित्य निमित को व्यक्तिनिष्ठता लोक साहित्य म भी है अत: दोनों म साम्य है। हिन्दी के प्रसिद्ध श्री संत तुलसीदास तथा सूरदास को रचनाएँ प्रारम्भिक काल म लोक साहित्य को रचनाएँ [illegible] [illegible] बाद म वे साहित्यगत हए। इस प्रकार के व्यवहार से लोक साहित्य और साहित्य म बहत [illegible] [illegible]

लोक साहित्य म गेयता है तो साहित्य म भी गेयता है तो साहित्य म भी गेयता है। लोक [illegible]त[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], सांस्कृतिक ऐतिहासिक पारंपरिक विषय हो[illegible] [illegible] प्रकार शिष्ट शहीती म भी इन विषयों से संबंध रचनाएँ ह। लोक साहित्य का इसीहस, [illegible] [illegible]ज्ञ[illegible], [illegible]त[illegible], [illegible] [illegible]ज्ञ[illegible], [illegible]ज्ञ[illegible], भाषाविज्ञान तथा धमशास्त्र से संबंध है इसी प्रकार साहित्य का भी इन्हों विज्ञानों से अटूट रिश्ता है। साहित्य म जो तत्व निहित ह वे ही तत्व लोक साहित्य म भी अध्ययन से स्पष्ट दृष्टि गोचर होते ह । इस प्रकर दोनों परस्पर पूरक सहयोग वाला अटूट संबंध भी है।

भारत म लोक साहित्य को परंपरा:

भारत म पूव से ही लोक साहित्य है इसका महत्व देखते हए पूव भारत म लोक साहित्य [illegible] परंपरा देखना महत्वपूण होगा। भारतीय लोक साहित्य का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है को भारत म बहत प्राचीन काल से लोक साहित्य को परंपरा स्पष्ट दिखाई देती है। देश का सवप्रथम तथा पवित्र धम ग्रंथ ऋग्वेद म लोक गीतों के बीज पाए जाते है। आज जिन गाथाओं का उल्लेख स्थान - स्थान पर उपलब्ध होता है, वेही लोकगीतों के पूव प्रतिनिधि माने जाते ह। ऋगवेद म अनेक मंत्रो म [illegible]:-

'प्र[illegible]न्[illegible] [illegible]: [illegible] [illegible]द्रस[illegible] [illegible]

मादे सोमस्य बोयत। ऋग्वेद 8/32/9

'□□□□' शब्द पद्य अथवा गीत के अथ म प्रयुक्त किया गया है। ब्राह्मण तथा आरण्यक ग्रंथो म गाथाओं का विशिष्ट उल्लेख उपलब्ध होता है। एतरेव ब्राह्मण म ऋक और गाथा म पाथक्य देखलाया गया है। पुरातत्व काल म राजा को किसी अवदान सतकृत्य को लक्षित करके जो लोक गीत समाज म प्रचलित थे एवं जनना द्वारा गाये जाते थे वे □□ '□□□□' □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□

लोक साहित्य को नीव हम महाभारत, □□□□□, □□□□□ □□□□, गृह्यसूत्र आदि पूणकालिंक ग्रंथो ,एम उपलब्ध ह। इन ग्रंथो म उपलब्ध उल्लेखों से यह प्रतीत होता है कि राजसूय यज्ञ, □□□□□ □□□ सीमंतो के सुभ अवसरो पर ऐसी गाथाएँ गयी जाती थों जो प्राचीन काल से परंपरा के रूप म चली आतों थों। संस्कृत के समान पाली भाषा के साहित्य म भी लोकगाथाओं के संदभ प्राप्त होते ह। पाली जातको से ज्ञात होता ह कि पाली गाथाएँ प्राचीन काल से परंपरा रूप म प्रचलित थों। गौतम बुद्ध के □□□□□ □□□□□□□□□□□□□ '□□□□' के नाम से प्रसिद्ध ह इन्हों गाथाओं का पल्लवन है। विक्रम सावंत कि तृतीय शताब्दी म प्रकृत भाषा के लोकगीतो कि उन्नति बड़ी तेज गीत से सम्पन्न हई। राजा □□□ □□ □□□□□□□ □द्वा□□ □ग्रा□□ '□□□□ □□□□' □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ तथा गाने को प्रथा का प्रचलन अधिक रहा होगा। राजा ने लगभग एक करोड़ गाथाओं म केवल सातसो श्रेष्ठ गाथाओं का संकलन किया; □□ प्रक्रि□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□

इससे स्पष्ट होता है एक लोक साहित्य को □□□□ □□□□ □□□□□ प्र□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ जो आज तक अवाध गति से चल रही है। विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों साहित्य के माधुय को परख जा सकता है। भले ही हिन्दी म लोकसाहित्य के संकलन और आंचलिक अध्ययन कारी जितना हआ □, उतना सैद्धान्तिक अध्ययन का नहों ह□ □,□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□- अलग भाषाओं के लोक साहित्य म यदि स्थल-□□□ □□□□□□□ रु□, □□, □□□□, प्र□□□, □□□-□□□, □□-□□, □□□-□□□, आदि से कुछ विशिष्ट अंतर दिखाई देता है फिर भी उसके मूल म एक ही □□□□□□ प्र□□□□□ □□□□□ □□□ □□

□□□ □□□□त□ सेवा को दिशा म अनेक विद्वानों एवं विदुषियों ने काय किया है जिन म विशेष रूप से उल्लेखनीय है- □□□□□□□□□□ □ग्र□□□, □□□□ □□□□ प्र□□ द्वि□□, □□सत्येन्द्र, □□□ कृष्णदेव उपाध्याय, □□धीरेन्द्र वमा, □□ □□□ □□□□, □□□□न्द्र □त□, □□□□□श्वी प्र□□□, □□ □त□□म,डॉ कृष्ण दिवाकर आदि। आजकल लोक साहित्य का प्रचार बहत बढ़ रहा है। अद्यतन काल म तो समाचार पत्र, □□□□, □□□□□□□□, दूरदशन तथा अन्य विविध माध्यमों से वह प्रगति कर रहा है। आज यह इतना लोक प्रिय विषय हो गया है को देश के विभिन्न महाविद्यालयों के पाढ्यक्रम म लोक साहित्य जैसा विषय अद्यतन के लिए जारी है।

लोक-संस्कृति तथा लोक साहित्य को पृथक सत्ता :

प्र□□□ □□□□□ □□□□त□ के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है को वैदिक काल से ही इस देश म संस्कृति को दो पृथक्-पृथ्क् धाराएँ प्रवाहित हो रही थीं।

1। शिष्ट संस्कृति

2□ □□□ □स्□□

शिष्ट संस्कृति से हमारा तात्पय उस अभिज्ञात वग को संस्कृति से है जो कि बौद्धिक विकास □□च□□□ □□□र पर पहंचा हआ था। जो अपनी प्रतिभा के कारण समाज का अग्रणी और पथ प्रदशक था जिसको संस्कृति का स्रोत वेद या शस्त्र था। लोक-संस्कृति से हमारा अभिप्राय जन □□□□□ □□ □□ □स्□□ □□□□□ □□□□ प्र□□□ □□□ □प्राप्त □□□□ □□, □□□□ो □□□ □□□□ □□ □□ □□द्धि□ □□□□स के निम्न धरातल पर उपस्थित थी। यदि ऋग्वेद तथा अथवद का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया जाय तो यह पाथक्य स्पष्ट हो जाता है। प्रो।बलदेव उपाद्याय ने इस विषय का गंभीर □□□□□ □□□□□□ □□□ □-"□□□ □स्□□ □□ष्ट □स्□□ □ो □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□क विश्वासों, अनुष्ठानों तथा क्रिया-□□□□ो, के पूण परिचय के लिए दोनों संस्कृतियों म परस्पर

सहयोग अपेक्षित रहता है। इस दृष्टि से अथवद ऋग्वेद का पूरक है। यह दोनों संहिताएँ दो विभिन्न संस्कृतियों के स्वरूप को परिचायिकाएँ ह। अथवद लोक संस्कृति का परिचायक है तो ऋग्वेद शिष्ट संस्कृति का। अथवद के विचारों का धरातल सामनी जनजीवन है तो ऋग्वेद का विशिष्ट जनजीवन [illegible]48

ऋग्वेद म यज्ञ यागादिक का विधान पाया जाता है तो अथवद म अंधविश्वास, [illegible]-[illegible], [illegible],मंत्र आदि का। इस प्रकार ऋग्वेद शिष्ट तथा संस्कृति जन के विचारों को झांकी प्रस्तुत करता है तो अथवद म लोक संस्कृति का चित्रण उपलब्ध होता है। अत: ये दोनों वेद दो भिन्न संस्कृतियों के प्र[illegible] [illegible]

उपनिषद काल म भी ये दोनों संस्कृतियों स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती ह। जिन उपनिषदों म [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], ब्रह्म आदि का वणन है वे अभिजात संस्कृति के ग्रंथ है। परंतु जिनम [illegible] ही लोक संस्कृति से है। गृहयसूत्रों को अगर लोक संस्कृति का विश्वकोश कह तो कुछ गलत नहीं है। इस म सभी जन जीवन का चित्रण पाया जाता है परंतु परस्कार तथा अश्वलायन गुहयसूत्रों म लोक संस्कृति का विशेष वणन उपलब्ध होता है। भिन्न-[illegible] [illegible]रों के अवसर पर आश्वलायन गृहयसूत्र म जहां शास्त्रीय विधानों का वणन किया गया है वहाँ जनता म प्रचलित लोक विश्वासों तथा प्रथाओं का भी उल्लेख हआ है। पाली जातकों म लोक संस्कृति का सजीव चित्रण किया गया है। वावेस जातक के अध्ययन से तत्कालीन व्यापारिक दशा का पता चलता है। नाच जातक म वैवाहिक प्रथा का उल्लेख कराते हए वर के आवश्यक गुणों को ओर संकेत किया गया है। इसी प्रकार अन्य जातकों [illegible]-[illegible], [illegible]-[illegible], [illegible]-[illegible], [illegible] वाल्मीकि के रामायण म जब सीता जी को हनुमान [illegible] करने लिए सोचते है को संस्कृत शिष्ट लोगों को भाषा है । यदि म यह भाषा का प्रयोग करुगा तो सिताजी मुझे रावण समझकर डर जाएगी। इस बात से ज्ञात होता है को संस्कृत विद्वान लोग बोलते थे

□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ष्ट-□□ □□□□ □□□□न्□-जनों म प्रचलित दो भाषाओं का उल्लेख किया है।

महाभारत म भी कौरवों तथा पांडवों को युद्ध गाथा को प्रधानता वणित है।उसमे लोक संस्कृति को भी झांको देखने को मिलती है। स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने वेद के पृथक लोक को सत्ता को स्वीकार किया है। वे कहते है को म लोक म और वेद म भी पुरषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हां।

अतोडस्मि लोके वेदे च प्रथित: □रु□□त्त□:□49

संस्कृत के कवियों तथा नाटककारों को कृतियों म लोक संस्कृति काजो विरत और भावी रूप □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□न करना अत्यंत कठिन है। कविकुल गुरु कालीदास ने अपने ग्रन्थों म शिष्ट संस्कृति का समान रूप से वणन किया है। मेघदूत मे यक्ष के घर को वापी का वणन कराते हए □□□□□□□□□ □'□□□ □□स□□□□□□□□□□□□द्ध□□□□□□□□' लिख कर उच्च वग के लोगों के □□□ □□ □□□ किया है वहाँ उनको सूक्ष्म दृष्टि ने लोक संस्कृति का चित्र भी प्रस्तुत किया है। धान के खेतों को रखवाली करने वाली स्त्रियॉ द्वारा ईख को छाया म बैठकर लोक गीतों के गाने का उल्लेख □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□

लोक साहित्य भी अत्यंत प्राचीन है। अनेक गाथाएँ उपलब्ध □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ थों। शतपथ ब्राह्मण तथा एतरेय ब्राह्मण म ऐसी गाथाएँ प्राप्त होती ह जिनम अश्वमेघ-□ज्ञ □□□□□□□ राजाओं के उदत्त चरित्र का संक्षिप्त वणन किया गया है।

यह बड़े आश्चय का विषय है को इतने विशाल संस्कृत साहित्य म इन्न उपरू□□□ □□ उदाहरणस्वरूप एक भी ग्रंथ आज विद्यमान नहों है। ये लोक नाट्य के रूप म उस समय जीवित थे। □□: इनके उदाहरणों को समझने के लिए पुस्तक लिखने को आवश्यकता नहों समझी गयी होगी। □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□-□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ है। परवर्तो काल म रंगमंच बहत उन्नत हो गया होगा और कालिदास तथा भवभूति जैसे महाकवियों के नाटक उपलब्ध होने लगे होंगे। तब ये लंबे नाटक उच्च स्टार के समाज म उपेक्षित हो

गए होंगे। समान्य जनता म फिर भी ये प्रचलित रहे। इनके लक्षणों को पढ़कर आज कल को रामलीला के पुराने लौकिक रूप का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। मध्ययुग के अनेक श्रेष्ठ प्रकरणों, चंपूकाव्यों और निजनधरी कथाओं का मूलस्वरूप लोक-कथानक ही है। इस प्रकार भारतीय साहित्य का अत्यंत महत्वपूण भाग लोक साहित्य पर आश्रित है।

यह बात सिद्ध होती है को लोक संस्कृ□ □□□ □□□ □□□□त □□ □□□ □त□□प्र□□□ □□□□ शिष्ट साहित्य के साथ ही साथ लोक संस्कृति तथा साहित्य को धारा भी इस देश म पुरातन काल से प्र□□□□ □□□□ □□□ □□

लोक साहित्य का समान्य परिचय:-

□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□स □□ि □ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ि □□□ □□ □□□□ □ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□, पुराणों को कथा को चचा एक दूसरे से करते थे। यह प्रक्रिया इतनी बढ़ी के आज उसका स्वरूप लोक साहित्य के रूप म बन गया है। यह गीत, □□□□, □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □ चलती रहेती है। उसका विशाल वृक्ष आज हम हमारी संस्कृति से, □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□

□□□ □□□□त □ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□स□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ि □□ □□□□□□

भारतीय लोकसाहित्य का सामान्य परिचय

भारत एक ऐसा देश है जहा विविध जाती के लोग रहते है। भारत म हर प्रांत को अपनी संस्कृति एवं लोक साहित्य है। यही साहित्य लोकसाहित्य के रूप म आज भी जीवित है। भारत म सभी लोग हर एक त्योहार म अपनी संस्कृति के साथ जोड़ती है । यहाँ पर सभी लोग संस्कृति को □□□जीवन का अभिन्न अंग मानते है। हर प्रांत म अपनी एक अलग पर परिभाषा ह।

किसी देश के वाड़्मय म लोक साहित्य का प्रधान स्थान होता है। भारत म विविध धम, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible],[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। संस्कृति यानि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक एक ही परंपरा का चलना। लोक संस्कृति यानि जन साधारण को वह संस्कृति है जो अपनी प्रेरणा लोक जीवन से प्राप्त करती है।

भारत देश म सभी राज्यों को एक अपनी अपनी संस्कृति ह। हर राज्य म एक संस्कृति म लोक [illegible] [illegible] है। लोक साहित्य भारत के हर एक राज्य म बस हआ है। हर प्रांत म अपनी एक खुद को पहचान हम देखने को मिलती ह। जिसे लोकसाहित्य माना जाता है। हर प्रांत म जीवन जीने के तरीके [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]-रिवाज म अपनी अलग-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भारतीय लोकसंस्कृति और लोक साहित्य का परिचय हम भारत के प्राचीन वेदों तथा महत्वपूण रामायण, महाभारत जैसे दो ग्रन्थों के माध्यम से पता चलता है को प्राचीन काल से ही यहा पर लोक साहित्य का स्वरूप मिलता है। लोक साहित्य को परिभाषा हम वेदों तथा पुराणों म दिखने को मिलती है। लोक साहित्य का उद्भव तो जब से मनुष्य का उद्भव ह तब से माना जाता ह। भारत म लोक साहित्य को आधुनिक काल म बहत सी प्रसिद्ध मिली ह।

भारत के प्रमुख लोक साहित्य निम्नलिखित है।

1. [illegible] -[illegible] [illegible]
   1. [illegible] [illegible]
   2. [illegible]
   3. [illegible] प्र[illegible]
2. [illegible] [illegible]
   1. उत्तर प्रदेश
   2. [illegible]
   3. [illegible]

4. मध्यप्रदेश

3. [illegible]त्त[illegible]-पूर्वा प्रदेश

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

4 [illegible]श्चि[illegible] [illegible]

[illegible]

5. [illegible]क्षि[illegible] [illegible]

1. [illegible]द्र प्र[illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

भारत के विविध राज्यों के लोक साहित्य के प्रमुख प्रकार म लोक नाट्य हम देखगे।

लोक नाट्य

भांड:- भांड कश्मीर का बाहपात्रीय नाट्य है। भांड शब्द संस्कृत के '[illegible]' [illegible] [illegible]भ्रं[illegible] [illegible] [illegible]ग[illegible]त[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]गशाला प्रयोग म आती है उसे [illegible]श्र [illegible] [illegible] [illegible]श्र [illegible] प्र[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]रु [illegible] प्र[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सामाजिक कुरीतियों पर चुभते व्यंग्य किए जाते ह। अंत म नाट्य को सुखांत के रुप म असत्य पर सत्य को विजय दशायी जाती है और मनुष्य को यह प्रेरणा दे जाती है को सावृत्तियां ही सफलता को द्योतक [illegible] [illegible]

रामलीला:- रामलीला उत्तरप्रदेश का लोक प्रिय नाट्य है। महाकवि तुलसी दास द्वारा मेधभगत ने [illegible] [illegible] श्री [illegible] किया रामलीला म मयादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जीवन को विभिन्न

झांकिया प्रस्तुत की जाती ह। रामचरित मानस मेन अनेक ऐसे स्थल ह जो अत्यंत नाटकीय ह, उन्हीं [illegible]

[illegible] होता है। इसका सूत्रधार व्यास आसनी होता है, [illegible]-समय पर आवश्यक निदश देता रहता है। [illegible]-अलग जगह का प्रयोग किया जा सकता है। युद्ध के लिए कोई मैदान तो केवल राम के [illegible], रावण आदि राक्षस वग के व्यक्ति बैठते ह।

[illegible] वातालाप करते है। रामलीला उत्तर प्रदेश का ही नहीं परंतु पूरे भारत वष म खेला जाने वाला धामिक मंच है। इसम धामिक तुष्टि होती ही है आपितु मनोरंजन का भी एक विशिष्ट साधन है। ग्वालियर म तो रामलीला का मंचन अब लोक कलाकार नहीं कराते है। उसे नगर के ही ना[illegible] कलाकार आधुनिक रंगमंच पर आधुनिक ध्वनि और प्रकाश के मध्य प्रस्तुत कराते है। प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ। शिव बरुआ की कृति '[illegible]' [illegible]

रासलीला : [illegible], आडंबरहीन रंगमंच रास है। नृत्य गीत और वाद्य संगीत का अपोव समावेश इसम होता है। श्रीकृष्ण और गोपियों के वृत्ताकार मण्डल म नृत्य करने के आधार पर इसका नामकरण हआ। अनेक नतकियोंसे युक्त नृत्य को रास कहा जाता है| [illegible] सम गद्य और पद्यमय संवाद भी चलते ह। कवित्त और सवैयों का प्रयोग बीच--[illegible] है। आँय लोक नाट्यों की भांति इसम भी मंगलाचरण होता है। अष्टछाप के कवियों ने अपनी कवि कृतियों द्वारा इसका विकास किया। रासलीला का नायक '[illegible]' [illegible] है। रास के आदि और अंत म आरती होती है। अंत की आरती जनता भी लेती है और श्रद्धानुसार नट

भी चढ़ाती है। रासलीला म श्रृंगार रस प्रधान होता है| [illegible] अभिव्यक्ति इसम होती है। बीच म यथास्थान हसी का भी समावेश होता है।

कीतनिया : मिथिला जनपद का धामिक नाट्य ह। यह नृत्य प्रधान लोक नाट्य ह। अन्य लोक नाट्यों [illegible] 'कीतन' भगवद स्मरण के रूप म किया जाता है। इसी से कीतनीयालोक नाट्य के प्रेरणा मिली। दरभंगा के महेश ठाकुर ने इसे विशेष रूप से प्रश्रय दिया [illegible] प्रदशन किया जाता है। इसके प्रारम्भ म पात्रों का परिचय कराया जाता है।

स्वांग : हरियाणा म स्वांग, सांग का संगीत पयाय एक लोकनाट्य है। ब्रज म स्वांग के गायकों की दृष्टि से दो प्रमुख परम्पराएँ उपलब्ध ह- (1) [illegible] (2) हाथरस की आगरा की परम्पराएँ अधिक आकषक रही है उसने कभी व्यावसायिक रूप धारण नहीं किया हाथरस के कलाकारों ने स्वांग को [illegible], [illegible], [illegible], आदि ऐसे मोहावर ह जो स्वांग शब्द की प्राचीनता बताता है। जब कोई व्यक्ति किसी पात्र को [illegible] है। स्वांग ठेठ ग्रामीण मनोरंजन है।

[illegible], [illegible], नकल करना आदि स्वांग का अथ को स्पष्ट कराते है। आकाश के नीचे खुले मंच पर इसको अभिनीत किया जाता है। वतमान म प्रदशित किए जा रहे '[illegible]' [illegible] सच्चरित्र कथानकों के अतिरिक्त छीछाले, [illegible]-कभी अश्लीलता का भी संयोजन पयाप्त हो जाता है। आजकल हाथरसी स्वांगों म '[illegible]' [illegible] हाथ म फटा बांस लिए हसी अभिनय के लिए प्रस्तुत हो जाते ह। मुंशी जी इन स्वांगों म अब मुखी पात्र बन गये ह । हरियाणा के स्वांगों म मुंशी जी नहीं आते ।

स्वांग खुले म होते ह। तख्त का ऊंचा मंच बनाकर उसके चारों ओर कभी-□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ है। स्वांग म पट-परिवतन का विधान नहीं होता। प्रवेश एवं प्रस्थान आदि सभी क्रियाएँ रंगमंच पर दशकों के समक्ष खुले म होते रहते ह। मंच के तीनों ओर बैठकर दशक अपना मनोरंजन करते रहते ह। स्वांगों के कथानक प्राय: शिथिल होते ह। पूवार्द्ध की अपेक्षा उत्तर्द्ध म कथानक तिव गति पकड़ जाता है। स्वांग म विभिन्न घटनाओं के घटित होने म दशक आनंद लेते ह।

माच : माच मालवा का प्रसिद्ध लोक नाट्य है। तुरा कलंगी भी ख्यालों की एक विशिष्ट शैली ह, जिसे माच का खेल भी कहते ह। पहले तो इनका रूप □□व□-सजना था। परंतु बाद म इसने लोक नाट्य का रूप धारण कर लिया। माच मंच का अपभ्रंश रूप है। एक विशेष प्रकार के मंच पर □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □ □□□□ □□□□□□।

इसकी पृष्ठभूमि म मालवा म प्रचलित धामिक और शृंगारिक प्रवृत्तियों का योगदान □□□ □ □□□□□□□ □□□□, गवापव, स्वांग नकले प्रदशन और तुरा कलंगी के आयोजन आरंभ म छोटे पैमाने पर होते थे। उन विभिन्न लोक शैलियों से मचकारों ने विभिन्न तत्व ग्रहण किये।

□□ ख□□□ □□ □□प्रा□: □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ होने के तथा कारण इसम नेपथ्य नहीं होता। यह लकड़ी की तख्तों एवं बल्लियों की सहायता से □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□न□-□□न□ प्र□□□ □□□□□□ □□□ □□□□द्य - □□□□□□□□ □□□□□□ □□□ सारंगिया भी इसी मंच पर एक ओर बैठे रहते ह। मंच के तीन ओर मशाल प्रज्वलित रहती ह। प्रारम्भ म सभी अपनी वास्तविक वेशभूषा म आकार मंच पर उपस्थित होते ह, और सामूहिक रूप म □□-देवताओं का स्मरण कराते ह। तत्पश्चात सभी कलाकार बारी-□□□ □□□□□स□□ □□ □□□□ कराते ह। जब वह गुरु वंदना के लिये आता है तब चोपदार चोप लगता हआ कलाकार का नाम □ल□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□स□ □ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ प्रदशित किया जाता है। तत्पश्चात गणेश एवं देवी वंदना की जाती है। एक कलाकार देवी का रूप

[illegible], और खेल को निविघ्न समाप्ति के लिये आशीवाद दिया जाता [illegible], गुरु की जयघोष करते हये प्रारम्भ हो जाता है।

[illegible] दि प्रवतक गुरु गोपाल जी ने सवप्रथम राजस्थानी ख्यालों का मलावी रूपांतर किया और इनही ख्यालो का आधार लेकर लोक शैली म मच ख्याल की रचना की। इन माचों की [illegible]-वस्तु शैली तथा रंगते भी राजस्थानी ख्यालों के ही अनुरूप रही। यथा-ख[illegible], [illegible] ख[illegible], [illegible] '[illegible]' [illegible] प्र[illegible]

[illegible] अनुकरण है। शेरमार खाँ का अत्यंत महत्वपूण स्थान होता है। यह अत्यंत निपूण, प्रत[illegible], हसी काला विशारद एवं गुणी व विनोदी होता है। यह अपनी उपस्थिती से श्रोताओं [illegible]

[illegible] 15 दिन पूव खंभा गाड़कर सूचना दे दी जाती है। इससे इसके प्रारम्भ होने की सूचना सवसाधारण को पहले ही से हो जाती है। सभी उत्साहपूवक मनोरंजनाथ निदृष्टि समय पर [illegible], आप्रेम तथा भक्ति भावना प्रधान होते ह। इसके संवाद अधिकांशत: [illegible]तात्मक होते ह। इसम नौटंकी की भाँति दोहे और चौबोलों का भी योग रहता है। माच की संवाद [illegible], [illegible], [illegible], तथा अभिनय बहत सुंदर होता है। संगीत नाट्य का प्राण है। नाट्य रात को [illegible] शहर म शोभा यात्रा [illegible]

बिदेसिया : [illegible], नृत्य और अभिनय मिश्रित बिहार का यह लोक नाट्य है। इस [illegible]

व्यक्ति अपनी नवविवाहित पत्नी को छोड़कर, [illegible] जाता है और वहा पर वह एक वैश्य के चुंगल म आ जाता है। इस नाट्य म पत्नी को मनोदशा का वणन है। इस नाटक को प्रसिद्धि प्राप्त होने के कारण भिखारी जी के सभी नाटक '[illegible]' [illegible] जादू था। उनहोंने नाटको के माध्यम से समाज को कुरीतियों पे [illegible]- [illegible] सास को झगड़ालू प्रावृत्ति, [illegible], [illegible], [illegible], विधा विलाप जैसे लोक नाट्य के प्रदशन से समाज म हो रहे भ्रष्टाचार तथा कुरीतियों पर [illegible] मंच ऊंचा होता है। नाट्य का प्रारम्भ भवानी को प्राथना से होता है।

भवाई :- [illegible] अथवा गाँव के प्रांगण म होता है। उसका रंगमंच अस्थाई होता है। यह अन्य नाटकों को तरह अंक बद्ध [illegible] इनको कथा वस्तु एक तरह को नहीं होती है। कथा वस्तु म सामाजिक एवं धामिकता को समस्याओं का विशेष रूप से उल्लेखन होता है। भवाई नाट्य म वेशों कहा जाता ह। भवाई के प्रवतक असाइत ठकार को माना जाता ह। भवाई का उदद्भव [illegible] असाइत ठकार ऊंझा गाँव के ब्राह्मण थे। वह भजन, कोतन बहत ही सुंदर शैली म प्रस्तुत करते थे। गुजरात म उस समय मुसलमान का राज था। असाइत के मित्र एवं शिष्य हेमाला पटेल को पुत्री गंगा को मुसलमान के सिपाही उढ़ा कर ले गए थे। हेमाला पटेल बहत संकट म थे [illegible] राजा के पास जाके सुंदर गान किया उसे प्रभावित होकर राजा ने असाइत को मांगने को कहा तो उनहों [illegible]? [illegible] पास ले गए। ब्राह्मण और पटेल ने एक थाली म खाना खाया इस बात का पूरे स[illegible] ब्राह्मण ज्ञाति ने असाइत को ज्ञाति से बाहर कर दिया उसी समय उनके तीन पुत्र थे। हेमाला पटेल ने

उनको सहारा दिया और उंझा म रहने के लिए घर दिया। वह उंझा म मंदिर म माताजी के कोतन [illegible] सामने आजीजी करने लगा और प्रण ले के बैठ गया माताजी ने उसको भक्ति से प्रसन्न हो कर उसे [illegible], [illegible], दिया और कहा को यह लिखना तुम ये पहन के नाट्य कारो तुम्हारी जाती म कोई भी [illegible] वेशो को रचना को। उनके पुत्र [illegible] -अलग जगह पे जाके यह वेश करने लगे। जो वेश म मुख्य पात्र थे उसे नायक कहा जाता है। समय के साथ वह नायक ज्ञाति म परिवतन हो गया। व्यास, [illegible], त्र[illegible] को गाँव के मुखिया जो पटेल होगा वह उनका वष के समय म उसे दान दिया जाएगा।

भवाई को प्रस्तुत करने के लिए कोई बड़ी जगह को आवश्यकता नही होती है। वह मंदिर के [illegible] कलाकार खुद यानि पुरुष ही करता है। उनका श्रृंगार भी वह खुद कराते है। उनको चाल जो होती है वह पुरुष हो कर भी स्त्री को लगती है। आज आधुनिक भवाई म स्त्री का पात्र स्त्री करती है पर [illegible]ई म रंगलो का पात्र बहत ही महत्व रहता है उन्ह कंचलियो भी कहा जाता है। वह भवाई म हसी मज़ाक का काम करता है। भवाई के कलाकार को संख्या कोई मापदंड नहों होता है। उसम भवाई करने वाले लोग और वाद्य बजाने वाले लोग अलग अलग होते है। भवाई म वाद्य के रूप म ढ़ो[illegible], [illegible], [illegible] उपयोग होता है। भवाई के कलाकार आज भी हम उत्तर गुजरात म मिल जाते है। आज भी भवाई के [illegible]

जात्रा:- [illegible], [illegible] बिहार का यह लोक नाट्य है। जात्रा का अथ उत्सव या प्रवास [illegible] त्र [illegible] रूप [illegible] थ वह लोकनाट्य के रूप म प्रचलित हो गई। [illegible] वी सदी म उनम पौराणिक कथाओं का [illegible] क्ति [illegible], [illegible] प्र [illegible], [illegible] श [illegible] श [illegible] जात्रा संगीत प्रधान होती है। जात्रा मे वाद्य के साथ साथ गाने वाले के कंठ [illegible] भी मधुर होना महत्वपूण माना जाता है। जात्रा पूरी अभिनय के साथ समूहिक गीत के साथ चलती [illegible] स [illegible] '[illegible]' [illegible] श्व [illegible] स्त्र [illegible] त्र [illegible] ऊंचे चबूतरे या खुल्ली भूमि पर होता है। जात्रा म नांदी पाढ़ को भांति म '[illegible] द्रि [illegible]' [illegible] प्रकार होता है जो एक उत्तर के लोकनाट्य म देवी देवताओं के स्तुती और गुरुवंदना है। जात्रा के [illegible] '[illegible]' के रूप म काय कराते है, वही मुख्य नायक के रूप म माना जाता है।

जात्रा का अभिनय खेल और सामूहिक गीत के रूप म होता [illegible] म स्त्री का समावेश नहीं था, पुरुष को स्त्री का अभिनय करता था। समय के साथ स्त्रियों का भी प्रवेश [illegible] त्र [illegible]

तमाशा :- महाराष्ट्र का यह प्राचीन लोक नाट्य है। तमाशा को मंडली को फड़ [illegible] दशक तीनों और बैठ जाते है। इस म ढोलक बजाने वाला, [illegible] म ढोलक ढोलको [illegible] ल [illegible] गणेश वंदना होती है। यह नाट्य म गोपी नृत्य के साथ साथ कृष्ण को लीला का भी कुछ अंश प्रस्तुत कराते है। गायकों द्वारा हर टेक के बाद '[illegible] ...[illegible]... [illegible] ' के साथ समापन कराते है। नतको '[illegible]' [illegible] प्र [illegible] सभी दशकों को भवविभोर करती है। यह लोक नाट्य म लावणियों के जवाब सवाल विशेष होते है।

[illegible], और मुख्य नाटकीय का अनुमान होता जाता है। लावणी को अंतिम पंक्ति को तुन तुन वाले और मंजीरे वाले टेक स्वरूप देते है। [illegible]

यक्षगान :- [illegible], [illegible], [illegible] ग्रामीण जनता म प्रचलित है। तेलुगु मे उसे '[illegible]' के नाम से प्रचलित है। यह नृत्य प्रधान [illegible], जिसम गीतबद्ध संवादो का प्रयोग किया गया है। लंबे लंबे संवादो यह लोक नाट्य म सहज ही कंठस्थ होते है। वणन का प्राधान्य यह नाट्य म मुख्य रूप से होता है। यक्षगान नाटको को [illegible], [illegible]

अंकियानाट :- [illegible] भारतीय भाषाओं म प्रचलित किया है। कही साल पहले '[illegible]' [illegible] नाटक म व्रज और आसामिया को मिश्रित भाषा का प्रयोग होता है। यह एक गद्य के रूप म होता है। इस नाट्य म सूत्रधार गायक, [illegible], प्र[illegible] प्रवक्ता और अभिनय के प्रवक्ता होते है। वह दशको और पात्रो के बीच का मध्यस्थ के रूप म काय [illegible] प्र[illegible]र के रूप म बताया गया है। 1. [illegible] 2. [illegible]-[illegible] 3. वणात्मक के छंद के गीत। शंकर देवे '[illegible]', '[illegible]', '[illegible]', 'रुक्मिणीहरण' [illegible] '[illegible] ' [illegible]

कथकली :- केरल का यह लोक नाट्य है। केरल म माँ भगवती को आराधना के लिए यहा नृत्य एवं [illegible] '[illegible]' संस्कृत नाटक से नाट्य के प्रकार उतर आए है। कालीकट [illegible] '[illegible]' से प्रेरित होकर '[illegible]' [illegible] मूल संस्कृत म लिखा हवा था। [illegible]-[illegible] के समय म वेट्टतु नामक राजा ने यह कला का विकास हकिया था। उन्होने कथा का निरूपण संगीत के साथ किया उसके साथ साथ पात्र के लक्षणिता के

[illegible] 'रुपट्टी' तोट्रयम म वंदना नृत्य एवं पुरुप्पट्टी म पात्र परिचय का विकास किया। उत्तर केरल के राजा कोट्टायम विद्वान कला का चाहक था। उन्होंने श्रृंगार रस पे प्राधान्य रखा। चत्तू पनिक्कर नामका उच्च कोटी का ब्राह्मण कलाकार था। उन्होने सबको गाना कला का प्रदश[illegible] के समय मेन स्वाति तिरुनल राजा के समयम काला का विकास हवा उन्होने नाटक लिखे जो पद्मनाभ मंदिर म होते थे। यहा पर कपलिंगम नारायण नन्पुथिरी ब्राह्मण को कथकली का अति शोख था। कथक[illegible] वेषभूषा के रंग का ध्यान से पसंद किया गया। उसके लिए स्वतंत्र नाटक मंडली को स्थापना को। उसके [illegible]

अभिनय कथकली का प्राण माना जाता है। आहारी अभिनय का कथकली का हाद है [illegible]क पात्रो का वातावरण को बना सकते है। कलाकार को रंगभूषा पात्र के रूप होती [illegible], राजसिक और तामसिक गुणो पे अनुरूप होती है। उत्तम कोटी को सात्त्विक गुण के [illegible], उद्धत पात्रो [illegible] 'त्ती' [illegible] 'त्ति' रंगभूषा थी। वाली और सुग्रीव के लिए वन्यप्रणी को वेषभूषा थोड़ी अलग थी। पात्रो के स्वभाव के अनुरूप वेषभूषा के रंग अलग होते है।

[illegible] 'ट्टी' कहा जाता है। उनको आंखो म चुंडपूव नाम के फूल का रस डाला जाता है। उनका [illegible] मानते है। हस्त मुद्रा से [illegible] 'स[illegible]क्ष[illegible]' पुस्तक म या मुद्रा का वणन है। कथकली म चंडा और मड्डलम वाद्यो से शुरू होता है। सूयास्त के समय सब लोग वह जाते है और एक बड़ी कांसा को

[illegible]

[illegible] त को पूरी जानकारी प्राप्त करनी पड़ती है। यह तालिम म [illegible] के अटपट ताल शिख ने को कुशलता मुख्य होती है। स्त्री पात्रो के नतन म लावण्य होता है। उनके नतन के समय इडक्का नमका डमरू [illegible]

[illegible]

कुचीपुड़ी :- आंद्रप्रदेश का यह लोक नाट्य है। उनके दो स्वरूप है - [illegible] देवदासी परम्पराओं म दाखल हई विकृतिओं को दूर करने के लिए यह शैली का उदद्भव हवा [illegible] 23 [illegible] कचूपुडी तेलुगू भाषा म यक्षगान का भी प्रस्तुत करती है। कचूपुडी खेल ने वाले कलाकार को आजीवन यह नृत्य करने को प्रतिज्ञा दी लाते है। कचूपुडी और मेलात्तूर यह दोनों एक दूसरे म एक साथ होते है। यह नृत्यगाँव के मंदिर मे प्रस्तुत होते है। प्रक्षकों खुल्ले म बैठ कर पूरी रात यह नाट्य [illegible]

थेरुकूत्तु :- यह लोक नाट्य तामिलनाडु है। धमपुरी उत्तर और दक्षिण आरकोट और चिंगलपुट जिल्ले का यह प्रखयात नाट्य है। यह नाट्य म सामाजिक, [illegible] यों म खेले जाते है। यह पौराणिक कथा के साथ ही शुरू होता है। द्रोपदी अम्मा के मंदिर

म सब लोग आते है। और वीस म दिन अग्नि पे चलाने का कायक्रम होता है। शक्ति संप्रदाय से [illegible], परंतु महाभारत से द्रोपदी को जो शक्ति मे रूपांतित करके [illegible] थेरुकुत्तू करते है। यह नाट्य म कमकांडी तत्वों का भी पूण रूप से समावेश होता है। बड़े रंगीन [illegible], [illegible] 20 दिन मे दसवे दिन म द्रोपदी का विवाह [illegible] प्रारम्भ हो जाता है। अठार म दिन दुर्योधन का वध करके पूण होता है। नाट्य को शरूआत म द्रोपदी अम्मा को प्राथना कराते है। मृदंग के ताल से सबको पता चल जाता है को '[illegible]' [illegible] शुरू हो जाता है। वीस वी सदी म थेरुकुत्तू का कोई भी साहित्य उपलब्द नहीं था। कृष्ण आयर और नाट्यकार मुथुस्वामी ने उसको देखभाल करके विकास किया। नृत्यांग पद्मा सुब्रमनयम ने थेरुकुत्तू पे अभ्यास किया।

यह लोक नाट्य भारत के प्रमुख लोक नाट्य के रूप म जाने जाते है। भारत म एक ही राज्य म मुख्य एवं गौण रूप से भी नाट्य होते है।

-: निष्कष :-

यह अध्याय म भारत के प्रमुख लोक नाट्य का परिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक शब्द, लोक साहित्य को व्याख्या जो विद्वानो ने की है उसका भी परिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतर भी बताया है। लोक साहित्य म भारत के जो प्रमुख राज्य के लोक नाट्य का विस्तार पूवक परिचय दिया है। लोक नाट्य अलग अलग राज्य के होकर भी वह [illegible] न कही साम्य है। उनको मुखी उद्देश्य लोक के प्रति जागृति लाना एवं अपनी परंपरा को पेढ़ी दर पेढ़ी तक फेलना है। हर एक नाट्य म मुख्य रूप से समाज के कल्याण की ही बात आती है। उसके साथ [illegible]

संदभ

1. सिद्धान्त कौमुदी, [illegible] वेकटेश्वर प्रेश बम्बई, [illegible]

2. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, [illegible] प्र[illegible], [illegible] 2014, [illegible]10

3. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, [illegible] प्र[illegible], [illegible] 2014, [illegible]10

4. [illegible], डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, [illegible] प्र[illegible], [illegible] 2014, [illegible]10

5. [illegible], [illegible], [illegible] प्र[illegible], [illegible] 2014, [illegible]10

6. लोक साहित्य की [illegible], डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, [illegible] प्र[illegible], [illegible] 2014, [illegible]10

7. [illegible] 267/6 [illegible]

8. [illegible], [illegible], [illegible] प्र[illegible], [illegible] 2014, [illegible]10

9. महाभारत आध्याय॰ प्रथम 1/84

10. [illegible] 3/20

11. [illegible] ’[illegible]’ [illegible] 1, [illegible]1, [illegible]65

12. लोक साहित्य की भूमिका, डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, [illegible] प्र[illegible], [illegible] 2014, [illegible]11

13. [illegible], [illegible], [illegible] प्र[illegible], [illegible] प्र[illegible] 1996 [illegible]18

14. [illegible], [illegible], [illegible] प्र[illegible], [illegible] प्र[illegible] 1996 [illegible]18

15. [illegible] प्र[illegible] [illegible] स [illegible]

[illegible] स [illegible] प [illegible], [illegible]- ए स्टडी आफ ओरिसन फोकलोर

16. [illegible] त [illegible] ी [illegible], डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, [illegible] त [illegible] प्र [illegible], [illegible]

2014, [illegible] 11

17. [illegible] व [illegible] - [illegible] ी [illegible]

18. '[illegible] ी [illegible] ' - [illegible] त्र [illegible], [illegible] 172 (त्र.प्र[illegible])

19. सम्मेलन पत्रिका ([illegible] स [illegible]) [illegible]. [illegible] ग्र [illegible] '[illegible] प्रत्[illegible]क्ष [illegible]' [illegible], [illegible] 65

20. [illegible] त [illegible] न [illegible], [illegible] 2004, [illegible] 11

21. [illegible] त [illegible] ज्ञ [illegible], [illegible]. सत्येन्द्र, प्र[illegible] 1962 द्वि[illegible] 2006 [illegible] 15-16

22. [illegible] त [illegible], [illegible], [illegible] प्र [illegible], [illegible], प्र[illegible] 1996 [illegible] 18

23. [illegible] त [illegible], [illegible], [illegible] प्र [illegible], [illegible], प्र[illegible] 1996 [illegible] 19

24. [illegible] त [illegible], [illegible], [illegible] प्र [illegible], [illegible], प्र[illegible] 1996 [illegible] 19

25. [illegible] त [illegible], [illegible], [illegible] प्र [illegible], [illegible], प्र[illegible] 1996 [illegible] 19

26. [illegible] स्व [illegible]:| सव ते हास्यता यांति यथा ते मूरख पंडिता:|-

[illegible] त्र ([illegible] क्ष [illegible]) [illegible] 505

27. लोक साहित्य विज्ञान, [illegible]. सत्येन्द्र, प्र[illegible] 1962 द्वि[illegible] 2006 [illegible] 3

28. [illegible] त: सिद्धान्त और प्रयोग, [illegible]. श्री [illegible], [illegible] प्र[illegible], [illegible] 4

29. लोक गीतों म समाज, पूणिमा श्रीवास्तव, प्रथम अध्याय, [illegible] 9

30. साहित्य की महत्ता, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्र[illegible], [illegible] 13

31. [illegible] त [illegible], [illegible], [illegible] प्र [illegible], [illegible], प्र[illegible] 1996 [illegible] 20

32. [illegible] त [illegible], [illegible], [illegible] प्र [illegible], [illegible], प्र[illegible] 1996 [illegible] 20

33. □□□ □□□□त्□ , □□□ □□□□□ □□□, □□□□ प्र□□□□, □□□□□,प्र□ □□1996 □□20

34. □□□ □□□□त्□ , □□□ □□□□□ □□□, □□□□ प्र□□□□, □□□□□,प्र□ □□1996 □□20

35. □□□ □□□□त्□ , □□□ □□□□□ □□□, □□□□ प्र□□□□, □□□□□,प्र□ □□1996 □□20

36. लोक साहित्य की भूमिका, □□□ □□□□□□□□□□, साहित्य भवन प्रा॰ ली॰ इलाहाबाद, □□ 2014, □□22

37. □□□ □□□□त्□ , □□□ □□□□□ □□□, □□□□ प्र□□□□, □□□□□,प्र□ □□1996 □□21

38. □□ □□□व□□□□□□□ □□ ब्रे□□□□□, □□□□□ □□32

39. the linguistic survery of india, languages vol 1x-1905 - pr grien son, pg . no. 34

40. □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□त्□, □□. □□□ □□, □□4

41. हिन्दी लोक साहित्य म हास्य और व्यंग, □□ . बैरिस्टर सिंह यादव, □□6

42.□□द्या□□□ '□□□□' □□□□ □□□, □□□□□ □□2

43. □त्त प्र□□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□, □□□□□, □

44. रूसी लोक साहित्य अपनी बात म, □□ . □□□□ □□□□□ □व□, □□□□ □□□ □

45.□□न्□□□ □□□, □□□□□□, □□□□□□ □त्□□□□, □□□□ 38

46. लोक साहित्य का स्वरूप, □□. □द्र□□□ □□ण□□, □□18

47. □□□ □□□□त्□ □□ स्वरूप, □□. □द्र□□□ □□ण□□, □□18

48. □□□□ □□□□ □द्या□□□, □□ 4 □□3 (1958) □□446

49. □□□ □□□□त्□ □□ □□□□□, □□□ □□□□□□□□□□, साहित्य भवन प्रा॰ ली॰ इलाहाबाद, □□ 2014, □□13